ओमशान्ति मीडिया

महाशिवरात्रि विशेषांक...

महाशिवरात्रि विशेषांक... मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

सत्यम् शिवम् सुंदरम् का आगमन.... !!!

सीधी रेखा में सभी हमको चलना सिखाते हैं, लेकिन सबकुछ यहाँ पर वृत्ताकार है। जिसको कहते हैं कि दुनिया गोल है। मतलब सबकुछ फिर से वही हो जाता है, जहाँ से शुरु होता है। दुनिया का चक्र भी इसी आधार पर बना जिसमें किसी चीज़ की शुरुआत जैसे हुई, उसका अंत आकर पुनः उस शुरुआत के साथ जुड़ता है। जैसे आज दुनिया का समय जैसा चल रहा है, तो सभी के मन में एक दूसरा संकल्प भी चलता है कि एक समय था जब दुनिया बहुत अच्छी थी, तो देखो, विचारों से भी वृत बन रहा है। अब नया समय, नया युग हमारे विचारों से ही आने वाला है। तैयारी हो चुकी है। सभी इंतज़ार में हैं कि नया युग आया कि आया...। समय चक्र की गति तीव्रता से उस प्रभात को छूने जा रही है जिसको स्वयं परमात्मा ला रहे हैं।

समय की घड़ी टिक-टिक करते हुए हर पल आगे बढ़ती जाती है। जो पल बीता, वो फिर नहीं आता। हर समय एक जैसा भी नहीं होगा। इस जहान में सबकुछ बदल रहा है, सिवाय एक, परिवर्तन के। परिवर्तन भी एक वृत्त के रूप में है। वो पुनः घूमते हुए वापिस वहीं आता है। जैसे साप्ताहिक चक्र, वार्षिक चक्र, ऋतु चक्र, ठीक वैसे ही सृष्टि का भी एक चक्र है, जिसे चार युगों में बांट कर हमने पूरा किया है। सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलियुग, फिर सतयुग... ऐसे चक्र फिरता रहता है। चार युगों के समयांतर के बाद वो चक्र पुनः पूरा होता है। कुल मिलाकर एक शब्द में अगर कहा जाए तो हर एक चीज़ अपने स्थान पर फिर से अपना एक साइकल पूरा करके आती है। समय-चक्र को काल-चक्र भी कह सकते हैं। ये सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग से पुनः सतयुग में आने का जो समय-चक्र है, अगर देखा जाए तो ये मानव-मन की अवस्था को ही रेखांकित करता है। जब मानव सतयुग में था तो उसका मन दिव्यता की ओज से भरा हुआ था। धीरे-धीरे अपनी ऊर्जा को यूज़ करते-करते उसकी मनः अवस्था दिव्यता के बदले आसुरी प्रवृत्ति की बन गई। प्रकृति के सानिध्य में आने के कारण वास्तविक स्वरूप को भूलता गया और उसकी ऊर्जा की बैटरी धीरे-धीरे डिस्चार्ज होती गई। देहभान में आकर अपनी शक्ति को क्षीण करता गया और अपने आप को शरीर समझ बैठा। कहते हैं ना, जैसा हम अपने को सोचते, वैसा बनते। कहाँ वे दिव्य-गुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी, सर्वसमृद्ध, वही फिर वास्तविकता से परे होने के कारण जैसे कि भिखारी की तरह हो गये। अगर हम एक दिन भी, सुबह से शाम तक अपने आप को देखें तो सुबह हमारे मन की अवस्था तरोताज़ा होती है और शाम ढ़लते-ढ़लते थकान या असहज वाली अवस्था हो जाती है। तो सुबह की अवस्था कुछ और, और शाम की अवस्था कुछ और। लेकिन मानव तो वही है ना! ठीक वैसे ही युग-चक्र में सतयुग, सतयुग के बाद त्रेता, त्रेता के बाद द्वापर आता, ऐसे में हमारी अवस्था और मनोदशा में गिरावट आती है। आज भी कहते हैं, भारत सोने की चिड़िया था, चारो ओर सुख-शांति-समृद्धि प्रचुर मात्रा में थी। इंसानों को हम श्रेष्ठ व ऊँची अवस्था में देखते थे जिन्हें हम देवता कहते हैं। समय बीतते-बीतते हम देवतायें नीचे की ओर सृष्टि चक्र में आये, उतरते चले गये और एक साधारण मनुष्य के रूप में जीवन जीने लगे। चूंकि यह चक्र बहुत धीमी गति से चलता है, तो अब मानव जैसे कि अज्ञान अंधकार की रात्रि में जी रहा है। न खुद का पता, न खुदा के बारे में कुछ पता, न सृष्टि-चक्र का ज्ञान! अब ऐसे अंधकार से छुड़ाने के लिए, इस अज्ञान-अंधकार से मुक्त करने के लिए पुनः इस सृष्टि चक्र में परमात्मा शिव का कार्य आरंभ होता है, जिसको हम शिवरात्रि व शिव अवतरण या शिव जयंती भी कहते हैं। आप थोड़ा ठंडे व शांत दिमाग से सोचेंगे और आंकलन करेंगे तो आप समझ जायेंगे कि हाँ, यही वो समय है जिसे हम शास्त्रों में सुना करते थे कि 'यदा यदा हि धर्मस्य...'। क्या आप ऐसा दृश्य नहीं देख रहे हैं जहाँ चारो ओर कलह-क्लेष, परिवार-समाज, देश-विश्व में तेरे-मेरे के झगड़े में यूं कहें कि एक मनुष्य ही दूसरे मनुष्य के खून के प्यासे हो गये हैं। आपको ऐसा नहीं लगता! विवेक तो यही कहता, ये तो हमारी आँखों के सामने सबकुछ घटित हो रहा है। दुःख, अशांति, लड़ाई-झगड़े, तनाव ने तो मानव-जीवन से चैन ही छीन लिये हैं। मानव ऐसे चक्रव्यूह में फंस गया कि उसे समझ नहीं आता कि कैसे इससे मुक्त हुआ जाये! जब ऐसी बेला आती है तब परमात्मा का इस समय-चक्र में दिव्य अवतरण होता है। जिसे हम 'शिवरात्रि' कहते हैं। वे फिर से ज्ञान-चक्षु देकर मानव-मात्र को दैवी-ऊर्जा का संचार कर सभ्य मानव बनाते हैं। और यही वो समय है जब परमात्मा आये हुए हैं और कहते हैं कि अब जागो, समय पूरा हुआ। अज्ञान-नींद को त्यागो और आप जो थे(देवी-देवता), वैसी ही अपनी मन की अवस्था बनाओ। अब नहीं तो कब नहीं। पुनः इस धरा पर दैवी सम्पदा युक्त स्वर्णिम दुनिया आने वाली है। आप उसी दुनिया में जाने के लिए तैयारी करें। जागो मानव, स्वयं को पहचानो और परमात्मा के दिव्य कर्त्तव्य को जानो। जानेंगे ना! और अपनी ही दुनिया में, जहाँ सुख, शांति और चैन की बंसी बज रही है, वहाँ चलने को तैयार हैं ना! परमात्मा तो आ चुके हैं, अपना दिव्य कर्त्तव्य कर रहे हैं। बस आप अपने दिव्य नेत्र खोलो और देखो, वो आपके सामने ही तो हैं! और कह रहे हैं... बच्चे, आपको पुनः खोई हुई आपकी अपनी जायदाद देने आया हूँ, जो आप गंवा बैठे हो। अब मुझे जानो और खुद को भी पहचानो। हाँ बाबा..., हम समझ रहे हैं कि आप वो ही तो हैं...हम सबके अति प्रिय 'सत्यम्, शिवम् सुंदरम्', जो आज हमें सुंदर बनाने के लिए आये हुए हैं।

शुभकामना संदेश

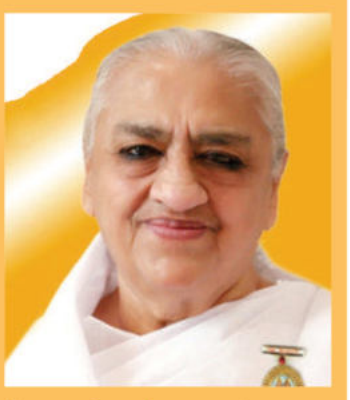

परमपिता परमात्मा शिव के अवतरण की यादगार महाशिवरात्रि का महान पर्व हर वर्ष सभी भक्त लोग बड़े ही स्नेह और श्रद्धा के साथ मनाते हैं। हम सभी अनुभव के आधार से यही शुभ संदेश देते हैं कि निराकार ज्योतिर्बिन्दु परमात्मा शिव अपने साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित हो, इस अंधकारमय कलियुगी सृष्टि को पावन सृष्टि बनाने का महान कर्त्तव्य कर रहे हैं। ये सुहावना समय आत्मा और परमात्मा के मिलन का है। तो आइये, हम सभी परमात्मा शिव से मिलन मनाकर, सर्व-शक्तियां प्राप्त कर, इस शिव जयंती पर्व पर संकल्प लें कि हम अपनी शुभ व श्रेष्ठ वृत्ति द्वारा इस दुःखदायी सृष्टि को परिवर्तन कर इसे सुखमय बनायेंगे। वर्तमान समय दुनिया में जो दुःख, चिंता, भय की बीमारी बढ़ रही है, इस बीमारी से मुक्ति दिलायेंगे। इन्हीं शुभ भावनाओं के साथ इस न्यारे और प्यारे अलौकिक जन्म-दिवस, शिवजयंती की कोटि-कोटि बधाई हो।

-दादी हृदयमोहिनी, मुख्य प्रशासिका,ब्रह्माकुमारीज़